NOTES

शीशे का दिल बताता है अपना तो हर कोई
पत्थर उठाए हाथ में फिर भी खड़े हैं लोग
इस धरती पर कोई भी तो इंसान न रहा
खुद को खुदा बनाने पर जब से अड़े हैं लोग।

-

बनाया है ये घर मैंने धीरे-धीरे
खुले मेरे ख्वाबों के पर धीरे-धीरे
किसी को गिराया न खुद को उछाला
कटा जिंदगी का सफ़र धीरे-धीरे
न रोकर न हँसकर किसी में उँडेला
पिया खुद ही अपना ज़हर धीरे-धीरे।

-

ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है अंतर्मन की वेदना
धूमिल होती जाती है जीवन की सारी चेतना
जीवन का आधार कहाँ है, कहाँ है आज प्रेरणा?
कब तक करते रहेंगे जीवन मूल्यों की अवहेलना?

-

दीवार क्या गिरी मेरे कच्चे मकान की
लोगों ने मेरे सहन में रस्ते बना लिए।

-

जो कुछ कि हमने की है तमन्ना मिली मगर
ये आरज़ू रही कि कोई आरज़ू न हो।

-

एक पत्थर की भी तकदीर संवर जाती है
शर्त यह है कि सलीके से तराशा जाए।

-